रात्रि क्लास 1/1/69 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?
जो बाप द्वारा सुनते हो वा मैग्ज़िन द्वारा पढ़ते हो या अपना विचार–सागर–मंथन कर भी सुनाते ....ोंगे। सावधानी हर प्रकार की मिलती रहती है। टाइम बड़ा वेल्युएबुल है। जितना टाइम बाप की याद में सफल हो उतना अच्छा। दिल्ली में अक्सर करके बहुत गोप हैं तो वहां से ही ऐसे समाचार आते हैं। कहां कहां (ब्र)ह्मा कुमारियों में भी है। वेस्ट टाइम जाने से या तो किसको रास्ता बताना या बाप को याद करना चाहिए। टाइम तो बहुत है। समझा भी देते हैं हरेक को अपना2 पार्ट बजाना है। मुख्य है याद की यात्रा और दैवीगुण। दैवीगुण धारण करने वा याद करने में माया की लड़ाई भी जरूर है। माया ऐसी है जो तुम स्टूडेन्ट की पढ़ाई ..... छुड़ा देती है। ऐसे बहुत हैं खास पुरूष आम स्त्रियां। पुरूष बहुत पढ़ाई छोड़ते हैं। फिर झरमुई झगमुई करते .....। बाप कहते हैं टाइम वेस्ट जाता है। माया से बड़ी सम्भाल रखनी है। बाप को याद भी जरूर करना है। अब पतित बने हैं तो पावन होने का पुरूषार्थ करना चाहिए। माया कोई को छोड़ती नहीं है। यहां भी माया अपन(ा) काम करती है। माया का काम है गिराना। लड़ते हैं तो गिरते हैं ना। माया का धंधा ही यह है। कितना भी अच्छा हो गफलत करने से माया अच्छा ही वार करती है। एक ही थप्पड़ से खुशी गंवाये देती है। तुम बच्चे पह(ले) आये तो बहुत बाप के बन गये गोया जीते जी मर गये। फिर भी तो माया कोशिश करेगी अपने तरफ खैंचने की। तो आधा महारथी, आधा घोड़ेसवार, आधा प्यादे जीतेगी जरूर। तुम हिसाब निकालेंगे आधा जरूर गिरे होंगे। अच्छे–2 बच्चे हैं नहीं। गिराती है तो एकदम..... की कमाई चट कर देती है। इसलिये बाबा सदैव कहते हैं खबरदार! सावधान! माया का धंधा ही है गिराने का। झरमुई–झगमुई आदि करना निन्दा करना भूलते ही नहीं। भल बाबा रोज समझाते हैं। समझते हो जो करेगा अपना ही पद भ्रष्ट करेगा। जो करते हैं उनको दिल में ल(गता) है। आज बाबा ने मुरली तो मेरे ऊपर चलाई। मुरली भिन्न2 प्रकार की चलती है। माया गफलत बड़ा जोर से कर....। (प)ता भी नहीं पड़ेगा। अन्दर समझेंगे हार खाई है। युद्ध तो मशहूर है ना। कौरव है आसुरी सेना। पाण्डव है दै(वी) सेना। वह युद्ध नहीं है। तुम कोशिश करते हो कौरवों को देवता बनाने, दैवीगुण धारण कराने। माया ते हारे हार, माया ते जीते जीत है। सम्भाल बहुत करनी है। माया मौका देखती रहती है गिराने का। मलयुद्ध में भी चलत(ा) है ना। ऐसे इनको गिरावें, ऐसे इनको गिरावें। तो माया का भी युद्ध चलता रहता है। मूल बात कि एक बाप को याद करते रहो। बाप सावधान करते रहते हैं। यह सावधानी बाप ही देते हैं। बाप को भुला दिया है ..... बड़ा घाटा पड़ता चमाट लग जाती है। कमाई बहुत भारी है। गफलत करने से फिर बहुत चमाट लगती है। ..... पर ठहरने नहीं देती है। इसलिये बच्चों को टाइम वेस्ट बिल्कुल नहीं करना है। इस कमाई में बहुत फायदा है। उनमें तो घाटा ही है। भारत ही वेश्यालय फिर भारत ही शिवालय बनता है। शुरू से भारत शिवालय था। परम पिता परमात्मा की स्थापना थी। परमपिता परमात्मा ही स्वर्ग का वरसा देते हैं। फिर भारत ही हार ख.... है। हार होती है विकार में जाने से। विकार को जीतने से जीत होती है। यह दुनियां है ही विकारी। सतयुग (में) विकारी होते ही नहीं। तो विकारों ने ही गिराया है। उन पर जीत पानी है। मनुष्य समझते हैं (विकार) बिगर दुनियां नहीं चल सकती। श्रीमत कहे काम जीत जगत जीत। मनुष्य मत कहे काम जीता नहीं जाता। पुरूषार्थ ही नहीं करते हैं। बच्चे जानते हैं जो दैवी घराणे के फूल होंगे वही आवेंगे। तुम समझते हो हम दैवी (घराणे) में जरूर आवेंगे। मोचरा भी खावेंगे टाली बुद्धि। बाप को भूल विकर्म किया तो टाली बुद्धि मार खावेंगे। तुम (बच्चों) के लिये खास ट्रयुबनल बैठती है। मोरध्वज और ताम्रध्वज की कहानी भी है। तुम सतोप्रधान बन रहे हो। वह तमोप्रधान हैं। माया से तमोप्रधान, ईश्वर से सतोप्रधान बनते हैं। बच्चे जानते हैं दुःख किसको सुख (किसको) कहा जाता है। खबरदारी बहुत रखनी है। पता नहीं पड़ता है माया के अधीन हो गया हूं। समझ नहीं पड़(ता)। यह भी बच्चे जानते हैं 100% निश्चय है कि बाबा आया हुआ है पढ़ाते हैं। पढ़ाई तो बहुत जरूरी है। स(टुडेन्ट) को पढ़ाई जरूर पढ़नी है। कब कब मुरली में ऐसी2 पायन्ट निकलती है तो खुशी का पारा चढ़ जाता है।

(कह)ते हैं गुह्य ते गुह्य प्वाइंट सुनाता हूं। मुरली न पढ़ने वालों का क्या हाल होता होगा जरूर माया गिराती (हो)गी। मुरली मुरली का कितना गायन है। मुरली तेरी में है जादू। मनुष्य को हीरे जैसा बना देते हैं इतना वह जादू है। समझा जाता है कौन–2 अच्छी सर्विस कर सकते हैं। कौन सर्विस करते–2 ठंढे पड़ जाते हैं। फिर संग मिल .... तो बच जावेंगे। न मिला तो फिर ..... बच्चों को खुशी रहनी चाहिए हमारे लिये बाबा तीरी पर बहिस्त (ला)ये हैं। पैराडाईज में जाने लिये पढ़ते हैं। जो अच्छा पढ़ेंगे उनके मन में जरूर खुशी होगी। न पढ़ते होंगे .... दिल खावेगी हम नापास हो जावेंगे। एक तो पढ़ाई छोड़नी न चाहिए। भल लिखते हैं नालेज एक ही है। (नई) बात नहीं। सो तो एक ही बात है मन्मनाभव; परन्तु प्वाइंट तो रोज बताते हैं ना। इतने वर्ष हो गये ..... भी अपने से पूछेंगे बहुत नये2 ऊंच पद पा लेते हैं। पुराने पुरूषार्थ कम करते हैं। माया से हरा लेते हैं। ..... बॉक्सिंग में कोई हार्टफेल भी हो जाते हैं। माया का ठूंसा भी ऐसा लगता है। एकदम मर पड़ते हैं। जैसे एक .....मी पकड़ा गया गया था जो हैमर से मारता था। इसलिये बाबा कहते हैं मुरली को छोड़ा नहीं। मन्मनाभ..... सेकण्ड की बात है; परन्तु दैवीगुण भी चाहिए ना। अपवित्र पवित्र की महिमा गाते हैं ना। जोर से चोट (लग)ने से फिर उठ न सके। कितनी भी कोशिश करे टाइम लगता है। काया कला माया खत्म कर देती है। हार–जीत का खेल है ना। इसलिये अपन को सम्भालते रहो। माया फट से भुला देगी। इसलिय बाप बच्चों को बहुत सावधान (कर)ते रहते हैं। दिन प्रतिदिन माया जोर होती जाती है। इसलिये बच्चों में बहुत खबरदारी चाहिए। पूरा दिवाला निकाल देते हैं। शिवबाबा को तो याद करने वाले बहुत ही थोड़े हैं। दैवीगुण भी जरूर धारण करनी है। आसुरी गुणों को बदलना है। जो भी बात है बाप को सुनाओ। तुम निन्दा कर और ही बिगाड़ते हो। लॉ अपने हाथ में ..... उठाओ। झरमुई झंगमुई बातों में अपना टाइम वेस्ट मत करो। वह पढ़ाई नहीं। शैतानी है। बाप को सुना दो ..... बाबा जाने बच्चे जाने। तुम तो अपने पुरूषार्थ में लग जाओ। कल्प पहले भी ऐसी राय दी थी। श्रीमत दी (जा)ती है कौन2 किस पद को पावेंगे वह मालूम पड़ जाता है। अच्छा, रूहानी बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।